

भारत सरकार
सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय
लोक सभा
तारांकित प्रश्न सं. *173
जिसका उत्तर 11.12.2025 को दिया जाना है

आपदा-प्रवण क्षेत्रों में राजमार्गों की स्थिति

*173. श्री वी. के. श्रीकंदन:

क्या सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार देश के आपदा-प्रवण क्षेत्रों में राजमार्गों के ध्वस्त होने की घटनाओं को रोकने के लिए नए मानक जारी करने पर विचार कर रही है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या राष्ट्रीय राजमार्गों को क्षति अधिकांशतः नदी के किनारे बनाए गए खंडों में देखी गई है जिनमें बढ़ती आबादी सहित विभिन्न कारकों के कारण नदी के बढ़ते जलस्तर के फलस्वरूप वृद्धि हुई है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या कतिपय मामलों में निर्माण अथवा योजना के अवैज्ञानिक तरीकों के कारण राष्ट्रीय राजमार्गों को क्षति पहुंची है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(घ) क्या हाल ही में राष्ट्रीय राजमार्गों/प्रमुख सड़कों पर बनाए गए पुलों के कई स्थानों पर ध्वस्त होने की सूचना मिली है और यदि हां, तो पुलों के इस प्रकार ध्वस्त होने के क्या कारण चिह्नित किए गए हैं?

उत्तर

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री
(श्री नितिन जयराम गडकरी)

(क) से (घ) विवरण सदन के पटल पर रखा गया है।

“आपदा-प्रवण क्षेत्रों में राजमार्गों की स्थिति” के संबंध में श्री वी. के. श्रीकंदन द्वारा पूछे गए दिनांक 11.12.2025 के लोक सभा तारांकित प्रश्न सं. *173 के भाग (क) से (घ) के उत्तर में उल्लिखित विवरण

(क) से (ग) सरकार का सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय मुख्य रूप से राष्ट्रीय राजमार्गों (एनएच) के विकास और रखरखाव के लिए उत्तरदायी है। आम तौर पर, हिमालयी क्षेत्र के पहाड़ी इलाकों और पश्चिमी घाट खंडों में आपदाओं के कारण बड़े पैमाने पर राजमार्गों को नुकसान हो रहा है, जिसमें बारिश के मौसम में राजमार्ग का ढहना शामिल है।

राष्ट्रीय राजमार्गों पर सतत नुकसान, जिसमें संरचनाएं भी शामिल हैं, विभिन्न अन्य कारणों जैसे डिजाइन की खामियों, मानकों / विनिर्देशों का अनुपालन न करने, अनुचित निर्माण तरीकों / तकनीकों, अत्यधिक वर्षा, भूस्खलन, बाढ़ आदि जैसी अप्रत्याशित घटनाओं की वजह से होता है।

सरकार ने आपदा प्रतिरोधी राष्ट्रीय राजमार्गों के अवसंरचना के विकास के लिए विभिन्न पहलें की हैं, जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं:-

- i. **विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने के हिस्से के रूप में ढलान अध्ययन और स्थिरीकरण को शामिल करने के लिए परामर्शदाता।** संपत्ति और अवसंरचना को नुकसान से बचाने के लिए मार्गाधिकार (आरओडब्ल्यू) के भीतर और बाहर दोनों को कवर करते हुए भूवैज्ञानिक और भू-तकनीकी जांच की जानी है। इसके अलावा, बारिश के पानी के लिए नालियां (कैच वॉटर ड्रेन), कैच पिट के साथ साइड ड्रेन, कट ऑफ ड्रेन, क्रॉस ड्रेनेज आदि के निर्माण पर यथोचित जोर दिया जाना चाहिए।
- ii. पहाड़ी ढलान स्थिरता की जांच और पहाड़ी इलाकों में भूस्खलन संभावित क्षेत्रों के लिए लागत प्रभावी (किफायती) दीर्घकालिक स्थिरीकरण उपायों का चयन करने के लिए मानकीकृत मानदंडों का कार्यान्वयन।
- iii. **संशोधित पहाड़ी निर्माण पद्धति**, जिसमें **स्थिर कटिंग निर्माण और सुरक्षा कार्य** के बाद ही पहाड़ी को काटने और ढलान सुरक्षा तथा इसके बाद के राजमार्ग निर्माण के लिए प्रारंभिक निर्माण करना अधिदेशित किया जाता है।
- iv. प्रायोगिक आधार पर 2 राष्ट्रीय राजमार्गों में आंतरिक ढलान बाधाओं की **सेंसर उपकरण आधारित** निगरानी भी की गई है।
- v. पहाड़ी और भूस्खलन संभावित क्षेत्रों को स्थिर करने के लिए, सतत जैव-इंजीनियरिंग उपायों जैसे कॉयर / जूट मैट हाइड्रोसीडिंग, ग्रीन स्ट्रिप्स के साथ इंटरलिंकड चेन मेश, सीढ़ीदार पटरी द्वारा बांस का ढेर लगाना और जूट मैटिंग पर शाकाहारी घास लगाकर कटाव रोकना आदि का कार्यान्वयन, जिससे ऐसे क्षेत्रों में राष्ट्रीय राजमार्गों पर सुरक्षा बढ़ जाती है।
- vi. पहाड़ी ढलान अस्थिरता उपकरण (इंस्ट्रुमेंटेशन) और वास्तविक समय में निगरानी के आकलन के लिए दिशानिर्देश तैयार करने हेतु भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), रुड़की के माध्यम से शुरू की गई अनुसंधान योजना।

(घ) देश में राष्ट्रीय राजमार्गों पर पुलों के ढहने की कुछ घटनाएं हुई हैं। पिछले वित्तीय वर्ष और वर्तमान वित्त वर्ष के दौरान राष्ट्रीय राजमार्गों की नद पर पुलों और फ्लाइओवरों के ढहने का विवरण और इसके कारण **अनुलग्नक** में दिए गए हैं।

“आपदा-प्रवण क्षेत्रों में राजमार्गों की स्थिति” के संबंध में श्री वी. के. श्रीकंदन द्वारा पूछे गए दिनांक 11.12.2025 के लोक सभा तारांकित प्रश्न सं. *173 के भाग (घ) के उत्तर में उल्लिखित अनुलग्नक

पिछले वित्तीय वर्ष और वर्तमान वित्त वर्ष के दौरान राष्ट्रीय राजमार्गों पर पुलों/फ्लाईओवरों के ढहने का विवरण और इसके कारण

क्र.सं.	राज्य/संघ राज्य क्षेत्र	एनएच नं.	पुल/फ्लाईओवर का नाम / स्थान / चैनेज	कारण	घटना का वर्ष
1	झारखंड	एनएच 43	चैनेज 77+100 पर नवनिर्मित बड़ा पुल	पी5 खंभा 55मिमी तक धंस गया है (पाल्मा गुमला परियोजना के 4 लेन बनाने का हिस्सा)।	सितंबर 25
2	पंजाब	एनएच 44	रावी पुल पठानकोट-जम्मू चैनेज 15.637	850.9 मी. (19x43.5+ 2x12.2) स्पैन का बड़ा पुल। रावी नदी में बाढ़ की वजह से माधोपुर बैराज के गेट टूट गए, जिससे नदी का मार्ग बदल गया, जिससे 100 मी. का पहुंच मार्ग क्षतिग्रस्त हो गया और 3 खंभे झुक गए।	अगस्त 25
3	जम्मू और कश्मीर	एनएच 44	किमी 27.700 (खदेरू)	बहुत ज्यादा बारिश और अचानक आई बाढ़ की वजह से, दो खंभे धंस गए हैं, जिससे बाई ओर 2 लेन पुल के तीन स्पैन को नुकसान हुआ है। दाई ओर 2 लेन पुल में बहुत ज्यादा घिसाव हुआ है।	अगस्त 25
4	जम्मू और कश्मीर	एनएच 44	किमी 77.200 (देवक)	बहुत ज्यादा बारिश और अचानक आई बाढ़ की वजह से, दो खंभे धंस गए हैं, जिससे दाई ओर 2 लेन पुल के तीन स्पैन को नुकसान हुआ है।	अगस्त 25
5	जम्मू और कश्मीर	एनएच 44	किमी 71.100 (थराद)	उधमपुर ज़िले में तेज़ और लगातार बारिश के साथ बादल फटने और अचानक बाढ़ आने की वजह से थराद स्थान (किमी 71.00) पर 300 मी X 550 मी पहाड़ी का हिस्सा ढह गया।	अगस्त 25
6	उत्तराखंड	एनएच-34	लिमचीगड पुल, किमी 53.5 जीडी रोड	बादल फटने से 24 मीटर का स्थायी पुल टूटा	अगस्त 25
7	उत्तराखंड	एनएच-309	कलगाड़ी पुल, किमी 238, रामनगर-पौड़ी खंड	बादल फटने से 20 मीटर स्पैन का आरसीसी पुल टूटा	अगस्त 25
8	उत्तराखंड	एनएच-107बी	तमक पुल, किमी 41.050, सुराईथोटा - मलारी रोड पर।	तमक गांव के इलाके में अचानक आई बाढ़, बादल फटने और उसके बाद अत्यधिक बारिश की वजह से पुल गिर गया।	अगस्त 25
9	हिमाचल प्रदेश	एनएच 305	मैंगलोर पुल किमी 79/875 पर (25.80)	आधी रात को एक ओवरलोडेड ट्रैकर ने पुल पार किया	अप्रैल 25

			मी स्पैन; आरसीसी डेक के साथ स्टील ट्रस) 18टन की भार क्षमता वाला पुराना पुल।	एफआईआर दर्ज की गई। मामले की जांच चल रही है।	
10	केरल	एनएच-66	कोल्लम बाईपास से कदम्बट्टुकोणम / चैनेज 497+370 (दाई ओर)	स्टेजिंग की समस्या और गलत देखरेख के कारण छोटे पुल (निर्माणाधीन) की स्कोफोल्डिंग ढह गई।	नवंबर 24
11	कर्नाटक	एनएच-66	पुराना काली नदी पुल, किमी. 102 + 470 (बाई ओर) पर	कुल 666मी लंबाई का कारवार और सदाशिवगढ़ को जोड़ने वाला पुल, जिसमें 8 स्पैन (2*19.4+2*69.5+4*122) हैं। लगभग 242.4 मी; लंबाई में टूट गया (3 स्पैन)।	अगस्त 24
12	गुजरात	एनएच 56	भारज (चैनेज 409/305)	भारज नदी में अचानक और तेज़ बहाव के कारण, भारज पुल का मौजूदा खंभा झुक गया है और खंभा 3 और खंभा 4 के बीच का हिस्सा धंस गया है और भारज नदी में पानी के और तेज़ बहाव के कारण, भारज पुल का खंभा (सं. 2) और स्पैन (सं.3) ढह गया।	अगस्त 24
13	मणिपुर	एनएच 37	इरांग बेली पुल	रेमल तूफान के दौरान भारी बारिश के कारण 160 फीट उंचा टीडीआर बेली पुल पूरी तरह से ध्वस्त हो गया	मई 24
14	मेघालय	एनएच-62 (नया 217)	पुल संख्या: 203/2 (पुराना लोहे का पुल)	ओवरलोड की वजह से पुल की 40 टन की वज़न क्षमता को अधिक करना होगा।	अप्रैल 24
15	हरियाणा	एनएच-48	पी4-पी5 खंभों और जी1-जी2 गर्डर के बीच, चैनेज 36+350 पर	एनएच 48 पर हीरो हॉंडा चौक के ऊंचे हिस्से में, पी4-पी5 खंभों के बीच और जी1-जी2 गर्डर के बीच, चैनेज 36+350 पर डेक स्लैब का कुछ हिस्सा नीचे गिर गया है, जिससे दाई ओर बिटुमिनस सतह (एमसीडब्ल्यू-01) धंस गई है।	मई 24
16	केरल	एनएच-66	चैनेज 410/230 पर	निर्माण के दौरान 4 पीएससी गर्डर ढह गए	मार्च 25
17	केरल	एनएच-66	स्पैन पी-202-पी-203 (अरूर से थुरवूर थेक्कू खंड का हिस्सा) पर दो पीएससी गर्डरों का ढहना।	एई की तरफ से लॉन्चिंग में इस्तेमाल हो रही सामग्री के प्रभाव की समीक्षा नहीं करना और अनुमोदित लॉन्चिंग स्कीम के इस्तेमाल को सुनिश्चित न करना।	नवंबर 25
